RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · JUNE 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

सच बता आसमाँ इस वर्ष तू कितने सितारे छीनेगा ?

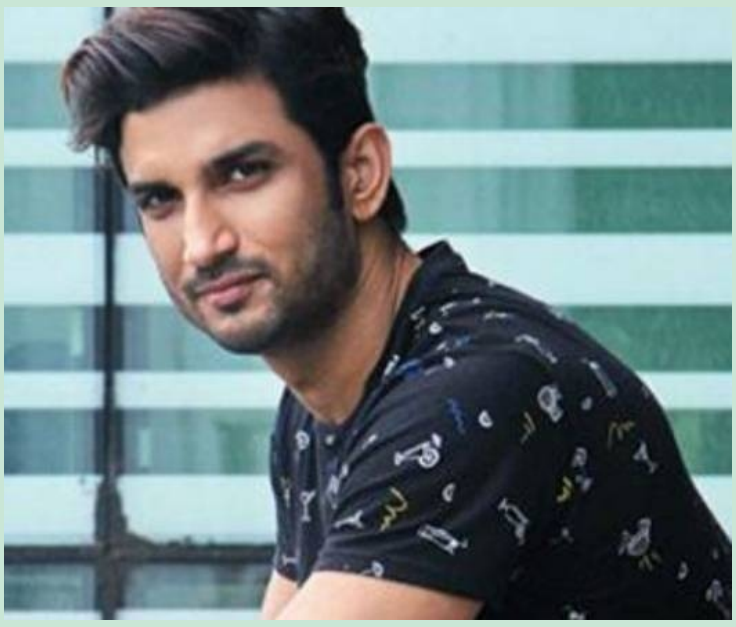

हिमांशु सिंह राजपूत, औरंगाबाद, बिहाररू–कितने हमारे छीनेगा, कितने तुम्हारे छीनेगा,सच बता ए साल धरती से कितने सितारे छीनेगा।पहले इरफान खान, फिर ऋषि कपूर,फिर वाजिद खान और कल ही सुशांत सिंह राजपूत।

ईश्वर को क्या मंजूर, पता नहीं पर लगता हैं कि सितारों से अपने आसमाँ को रौशन कर रहा हैं। लाखों सवाल लेकर सुशांत जिंदगी को अलविदा कह गए। कुछ तो राज दिल में होंगे जो सुशांत जता नही पाए,कुछ तो उलझने होंगी जो बता नहीं पाए,,कुछ तो तकलीफें होंगी जो जहाँ में बता नही पा रहे होंगें।जब उलझनों व उलफतो से उबरने का कोई वजह नही मिल पाया होगा तो सचमुच हमेशा के लिए खामोश हो गए।

सुशांत सिंह राजपूत की असामयिक आत्महत्या बहुत सारे सवाल पीछे छोड़ गई. क्या ऐसी वजह रही होगी कि ऐसा इंसान जिसने एक छोटे से गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में रहते हुए आसमान की ऊंचाई के सपने देखे और दुनिया से लड़ कर उनको पूरा किया. लेकिन आज खुद से ही हार गया.... धन दौलत नाम शौहरत क्या नही था... लेकिन कमी क्या रह गयी है

जो ना सोचने वाली बात... तो जनाब वो कमी है अपनापन... वजूद का वो खालीपन जिसको कोई समझ ही नही पता... ये सिर्फ इन नामचीन लोगो की समस्या नही है.. आज 100 में से 70 लोग इस तनाव से ग्रसित है... दुनिया की भीड़ में हर एक इंसान अकेला रह गया है... तनाव के उन क्षणो में मजबूत लोग भी आत्महत्या का निर्णय ले लेते हैं...पता नही वो कौन सा क्षण होता होगा जब इंसान को जिन्दगी से आसान मौत लगने लगती है... सारी मोह माया एक पल में खत्म हो जाती है...वो लोग जिनके पास सब कुछ है।शान, शौकत, रुतवा, पैसा, इज्जत,और ढेर सारा प्यार करने वाले लोग, इनमे से कुछ भी नही रोक पता उन्हें?

छोस्तो आज एक प्रार्थना है आपसे... अपने मन की बात अपनो से कहिये... सलाह लीजिये...खुश रहने की कोशिश कीजिये... अपने अलावा साथ वालो का भी ध्यान रखिये... पहचानिये ऐसे लोगो को जो अकेलेपन के अवसाद से लड़ रहे है.. उनको थोड़ा समय दीजिये... उनसे थोड़ा बात कीजिये... क्या मालूम आपका 5 मिनट का साथ उनके कठिन समय के कठिन निर्णय को बदलने में समर्थ हो और आप किसी की जिंदगी बचा ले है जीवन मे उतार–चढ़ाव आते रहते हैं, हर किसी को किसी न किसी बात का तनाव जरूर रहता हैं। पर इस तरह जीवन को समाप्त करना अपनो के साथ–साथ परिवार वालो को भी तोड़ कर रख देता है द्य ,,आप हमेशा याद आओगे सुशांत।

माही का किरदार निभाने वाला सुशांत, जिंदगी का मैच हार गया'

चन्दन कुमार : एक लड़का जो बिहार के पूर्णिया जिले में जन्म लेता है, पिता के साथ पटना में पढ़ाई पूरी करता है, देश के कठिन परीक्षा AIEEE (अबJEE) में सातवीं रैंक लाता है, फिर डांस करने का सुरूर चढ़ता है, और धीरे धीरे बॉलीवुड का हिस्सा बन जाता है। कई साल तक फिल्म इंडस्ट्री में अपनी कहानी को लिखता चला जाता है जो कुछ फीकी लेकिन ज्यादातर मीठी जान पड़ती है। फिर अचानक उसके आत्महत्या की खबर आती है। बॉलीवूड का यह सितारा जो महज 34 साल का था और अपने सोशल साइट से लोगो को अक्सर जिंदगी जीने को कहता था खुद अपनी जिंदगी को बिना मुकम्मल किए चला गया। आत्महत्या करना जीवन के दुखों या परेशानियों से पार पाना होता है, बहुत मजबूत होना होता होगा, कई ऐसे सपनों को तैरते छोड़ जाना जो तमाम खुशियां दे सकती थी पर वो गम कितना हावी होगा जिसने ऐसे मुस्कुराते होंठो को खामोश कर दिया होगा। आज सुशांत के देहांत से सिर्फ सुशांत नहीं मरे उनके साथ सुशांत को अपना आराध्य मानने वालों की खुशी भी मर गयी उनके सफलता को देख खुद को प्रोत्साहित करने वालों की हिम्मत भी मर गयी। अभी कूछ दिन पहले ही इन्होने इंस्टग्राम पर अपने स्वर्गवासी माँ की फोटों सांझा कर उन्हें याद कर रहे थें पर किसको पता था कि वो खुद इस दुनिया से मुंह मोड़ कर अपने माँ के आंचल में छुप जायेगें। हमें किसी के आत्महत्या के बाद उनसे संवेदनाएं रखाने के साथ–साथ तिल भर शिकायत भी रखनी चाहिए ताकि जब भी किसी के दिमाग में ये करने का सूझे तब वो कम से कम एक बार इस बात को सोचे की दुनिया उनसे दुखी भी होगी और उनसे सवाल भी पूछेगी की क्यों ? आखिर क्यों?

सुशांत का कातिल कौन!?

यूँ तो अब तक पूरा का पूरा साल 2020 ही एक बुरे सपने की तरह रहा है,परंतु 14 जून 2020 को हिंदी फिल्म जगत का काला दिन घोषित किया जाए तो वो गलत नहीं होगा। सुशांत सिंह राजपूत की खुदकुशी से समाज का हर तबका स्तब्ध हो गया। सबके जेहन में एक ही सवाल था!आखिर क्यों? मुश्किल दिनों को जी कर अपनी मेहनत से सफलता पाने वाला , अपने अरमानों को पूरा करने के लिए आईआईटी दिल्ली जैसे प्रतिष्ठित कॉलेज को छोड़ने वाला कुशाग्र सुशांत ने क्यों आखिर खुद आपको समाप्त कर लिया? पर क्या सुशांत ने खुद को मारा....? नहीं! दिखाई नहीं देता पर शामिल जरूर होता है....

हर खुदखुशी करने वाले का कातिल जरुर होता है!!

कलियुग के अनगिनत कोढ़ों में भाई–भतीजावाद जो सोशल मीडिया में नेपोटिजम के नाम से कुख्यात है, प्रमुख है। राजनीति,सरकारी भर्तियों से लेकर बॉलीवुड तक में भाई–भतीजावाद अपने पांव पसार चुका है। सुशांत की मौत के बाद हो रहे खुलासे चौकाने वाले हैं।

27 फरवरी को कमाल खान ने एक ट्वीट में कहा था कि बॉलीवुड के बड़े प्रोडक्शन हाउस जैसे यशराज फिल्म्स, करन जौहर,सलमान खान,टी–सीरीज आदि ने सुशांत का बायकॉट करना शुरू कर दिया है, जिससे वो टीवी–धारावाहिक और वेब–शो में ही काम कर पाए। खैर ये वही हास्यास्पद इंसान हैं जिसने छिछोरे जैसी उम्दा फिल्म को 1 स्टार दिया था। ये सब बखेड़ा सुशांत द्वारा यशराज बैनर्स से 2 साल का अनुबंध तोड़ शेखर कपूर की फिल्म श्पानीश के लिए हामी भरने से शुरू हुआ ।00

पर इन बड़े–बड़े निर्माताओं की नीयत बहोत ही खोटी है। सुशांत जैसे बाहरी कलाकारों को बेकार फिल्में देकर ये जनता के दिल से इन मेहनती कलाकारों को गिरा देते हैं और दूसरी ओर अच्छी कहानियां इन्हीं के बच्चों को मिलती जिससे जनता उन्हें अपनी पलकों पर बिठा लेती।

करन जौहर ने भी सुशांत के साथ ष्ड्राइवष जैसी घटिया वेब सीरीज का निर्माण कर सुशांत के करियर को लगभग खत्म ही कर दिया। अब ऐसे में सुशांत ने अच्छी कहानी को तरजीह दिया तो उनके साथ इन शफिल्म माफियाओंश ने यह किया।

अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर जिस मुकाम पर सुशांत पहुंचे वह उनके मजबूत मनोबल को दर्शाता है। उनके 50 सपने(विशलिस्ट) उनकी जिंदादिली का प्रमाण हैं। बैकग्राउंड डांसर से बेशुमार पैसा और शोहरत कमाने तक का सफर उन्होंने बखूबी पूरा कर लिया पर अपनी मंजिल पे पहुँच उन्हें पता चला कि वो चकाचौंध झूठी थी जिसका वो हिस्सा बनना चाहते थे।

बॉलीवुड के रंगीन गलियारों का काला सच उन्हें बॉलीवुड की पार्टियों में पता चला,जँहा उन्हें स्टारकिड्स के आगे नीचा दिखाया जाता था। फिल्मफेयर अवार्ड्स में उनकी बेहतरीन फिल्म षछिछोरेष को जिस तरह नजरअंदाज किया गया वो काफी कुछ बयाँ करता है। सुशांत की इस हालत के जिम्मेदारी तो हम सब भी हैं। यदि नहीं तो उन्हें इंसटाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर सामूहिक रुप से अपनी फिल्म ष्सोनचिरैयाष देखने के लिये एक अजनबी से निवेदन न करना पड़ता।उन्होंने तो बॉलीवुड को स्वीकार कर लिया था पर बॉलीवुड कभी उन्हें अपना न पाया। अपनों के ही बीच अपनत्व की ये कमी उनके इस कदम के पीछे का प्रमुख कारण बनी।

सुशांत की खामोशी में जो शोर था वो अब सुनाई दे रहा।

समाज का ध्यान मानसिक स्वास्थ्य जैसे अहम परन्तु उपेक्षित मुद्दे की ओर जा रहा है। मानसिक अवसाद एक बीज की तरह होता है जो मनुष्य के अंदर की स्वयं के प्रति की हीन भावना से समय के साथ विकसित होता और स्वयं उस मनुष्य को भी इसका पता न चल पाता। खुशनसीब हैं आप यदि आप के पास कोई है ऐसा जो चेहरा पढ़ कर जान जाए कि आप किसी कठनाई में हैं और फिर प्यार से वास्तविक चिंता करते हुए पूछे, "क्या हुआ सब ठीक है ना?

सुरक्षा परिषद में चुने जाने पर अमेरिका ने भारत को दी बधाई

अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य के तौर पर भारत का स्वागत करते हुए कहा कि वह अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए सुरक्षा परिषद में भारत के साथ मिलकर काम करने का इच्छुक है। अमेरिका के विदेश मंत्रालय के दक्षिण एवं मध्य एशिया ब्यूरो ने कहा कि ''हम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का गर्मजोशी से स्वागत'' करते हैं और ''भारत के चुने जाने पर उसे बधाई देते है''

उसने ट्वीट किया, ''हम अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के मामलों पर मिलकर काम करने के इच्छुक हैं। यह भारत और अमेरिका के बीच समग्र वैश्विक रणनीतिक साझीदारी का विस्तार है।'' भारत शक्तिशाली संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के चुनाव में मिले जबरदस्त समर्थन की मदद से दो साल के लिए इसका अस्थायी सदस्य चुना गया है।

इस अभूतपूर्व चुनाव में 192 सदस्य देशों के राजनयिकों ने कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के मद्देनजर सामाजिक दूरी के नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए और मास्क पहनकर मतदान किया। सुरक्षा परिषद की पांच अस्थायी सीटों के लिए हुए चुनाव में एशिया–प्रशांत देशों की श्रेणी से उम्मीदवार भारत को 192 मतों में से 184 मत मिले।

सुरक्षा परिशद के अस्थायी सदस्य के तौर पर भारत का दो वर्ष का कार्यकाल एक जनवरी 2021 से शुरू होगा। भारत के अलावा आयरलैंड, मेक्सिको और नॉर्वे ने भी चुनाव जीता।

इससे पहले भारत 1950–1951, 1967–1968, 1972–1973, 1977–1978, 1984–1985, 1991–1992 तथा 2011–2012 में परिषद का अस्थायी सदस्य बना था।

नेपोटिज्म पर बोले स्टाइल मूवी के एक्टर साहिल खान ने किये बड़े खुलासे बोले मुझसे भी छीनी गयी थी फिल्मे

प्रिंस कुमार दिल्लीरू बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या के बाद सोशल मीडिया पर भाई–भतीजावाद को लेकर नई बहस छिड़ गई है। करण जौहर से लेकर सलमान खान, आलिया भट्ट, सोनम कपूर, शाहरुख खान, रणबीर कपूर जैसे कई बॉलीवुड सेलेब्स पर नेपोटिज्म को लेकर कई आरोप लग रहे हैं। इसी बीच अभिनेता साहिल खान बड़ा खुलासा कर बॉलीवुड के काले चिट्ठे को दुनिया के सामने रख दिया है। एक्टर साहिल खान ने सलमान खान और शाहरुख खान का नाम लेते हुए कहा 'ऐसा बहुत कम लोगों के साथ होता है कि अपनी डेब्यू फिल्म रिलीज होने के तुरंत बाद इंडिया की टॉप बॉलीवुड मैग्जीन दो सुपरस्टार के बीच आपको जगह देती है।'

साहिल खान ने सोशल मीडिया पर आगे लिखा 'मुझे मैग्जीन के कवर पेज पर देखने के बाद एक सुपरस्टार को बहुत बुरा लगा। मैं भी उस समय नया था उस सुपरस्टार का फैन था और सबसे बड़ी बात मैं कमजोर था। मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि मेरे साथ क्या हो रहा है। वो मुझ से अच्छे से बात करते थे। अपनी फिल्म में मुझे साइड रोल देने की बात करते थे। बॉलीवुड का यह सुपरस्टार यहीं नहीं रुका उसने मुझे कई फिल्मों से बाहर कर दिया। फिल्म के साथ इस सुपरस्टार ने मुझे टीवी शो में आने का भी ऑफर दिया था। इसके बाद मुझे समझ में आ गया नाम बड़े और दर्शन छोटे, आप खुद गेस करो कौन है वो?'

'अभिनेता ने आगे कहा 'सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद इनका असली चेहरा सबके सामने आ गया है। इंडस्ट्री में आए नए टैलेंट को ये लोग आगे बढ़ने नहीं देते। जॉन अब्राहम के अलावा पिछले 20 सालों में कोई भी आगे बढ़ नहीं पाया। आप खुद सोचिएगा इस बारे में ये बड़े स्टार नए टैलेंट को क्यों आगे बढ़ने नहीं देते?' यह पोस्ट कर अभिनेता साहिल खान ने भी भतीजा

वद पर अपने विचार रखे और कड़ी निंदा की

भारत में इन 2 दवाओं से होगा कोरोना का इलाज, सरकार ने दी मंजूरी

शोएब रहमान, दिल्ली केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना संक्रमितों के इलाज के लिए नया प्रोटोकॉल जारी किया है स्वास्थ्य मंत्रालय ने एंटी वायरल ड्रग रेमडेसिवीर, इम्यून सिस्टम बढ़ाने वाली दवा टोसीलीजुमैब और प्लाज्मा थैरेपी के जरिए जांच चिकित्सा के तहत इलाज की मंजूरी दी है इससे पहले मंत्रालय ने रेमडेसिवीर और प्लाजमा थैरेपी दोनों से इलाज करने पर रोक लगा दी थी स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस क्लीनिकल मैनेजमेंट प्रोटोकॉल की समीक्षा रिपोर्ट आने के बाद इन दवाओं को मंजूरी दी है इसके अलावा रोगी को दवा कितनी मात्रा में दी जानी चाहिए, इसका भी विशेष ध्यान रखना चाहिए नई रिपोर्ट में बताया गया है कि कोरोना मरीजों को शुरुआती स्टेज पर एंटी मलेरिया ड्रग हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन देने का सुझाव दिया है. हालांकि गंभीर मामलों में इसे देने से बचना चाहिए के बाद ही रोगी को ये दवा दी जानी चाहिए है रेमडेसिवीर एक न्यूक्लियोसाइड राइबोन्यूक्लिक एसिड (RNA) पोलीमरेज इनहिबिटर इंजेक्शन है अफ्रीका के देशों में तेजी से फैलने वाली बीमारी इबोला के इलाज के लिए इसे अमेरिका की फार्मूस्यूटिकल कंपनी गिलियड साइंसेज ने बनाया था जबकि प्लाज्मा थैरेपी के जरिए भी रोगियों का इलाज संभव है किसी वायरस की चपेट में आने के बाद इंसान का शरीर एंटी बॉडी जेनरेट करता है एंटी बॉडी पर्याप्त होने पर शरीर में वायरस खुद–ब–खुद नष्ट हो जाता है ऐसे में एक व्यक्ति के खून से प्लाज्मा में मौजूद एंटीबॉडी को दूसरे के शरीर में डालकर उसे ठीक किया जा सकता है जबकि प्लाज्मा थैरेपी के जरिए भी रोगियों का इलाज संभव है किसी वायरस की चपेट में आने के बाद इंसान का शरीर एंटी बॉडी जेनरेट करता है एंटी बॉडी पर्याप्त होने पर शरीर में वायरस खुद–ब–खुद नष्ट हो जाता है ऐसे में एक व्यक्ति के खून से प्लाज्मा में मौजूद एंटीबॉडी को दूसरे के शरीर में डालकर उसे ठीक किया जा सकता है

आम आदमी

न ही जय, ना ही श्रेय, परन्तु इसके बिना, ना ही देश चल सकता है और ना ही नेता। जीवन में अगर कोई साथ है तो वो है समस्या। समस्या ये नहीं कि समस्या साथ है वरन समस्या ये है कि इनकी समस्या को कोई समझने वाला नहीं है। किसी भी विपदा में सबसे पहले प्रभाव आम आदमी पर ही होता है। प्रभाव का कारण यही है कि इनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता। सबसे बड़ा रोना आम आदमी का यही होता है कि वो किसी के सामने रो भी नहीं सकता। सरकार की नीतियों का सबसे बड़ा फायदा गरीब और अमीर ही उठाते है, आम आदमी तो केवल उन नीतियों को नौकरी पाने के लिए अपनी जनरल नॉलेज (सामान्य ज्ञान) को मजबूत करता है। गरीब और अमीर, सरकार को खा भी जायेंगे तो सब माफ है परन्तु आम आदमी आम ही खा ले, वो ही बड़ी बात है । एक खास बात और देश के सारे कानून, सख्ती से जो पालन करने होते है वो आम आदमी को ही करने होते है। चाहे वो सड़क पर हो, चाहे वो काम पर हो, चाहे वो घर पर हो। इसलिए शायद सबसे ज्यादा डर एक आम आदमी में होता है। ना ही उसके लिए कोई कार्ड होता है बैंक वगैरह में, ना ही उसके मरने पर उसे कोई राशि मिलती है बल्कि मरने पर उसके संदेह और किया जाने लगता है। और मैं समझता हूँ जो संस्कार सबसे ज्यादा अपने बच्चो में देता है वो है आम आदमी। उसे पता है उसे किसी का सहारा नहीं है। बदमाशो द्वारा भी लूटने का सबसे ज्यादा डर आम आदमी को रहता है। भ्रष्टाचार को अमीर लोग बढ़ावा देते है और झेलना होता है आम आदमी को। और अंत में जो आम आदमी की गुठली छीनती है वो है महंगाई। मेरी नजरो में आम आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन उसका खुद का दिखावा है। जो वो अपने समाज में दिखावे की वजह से ज्यादा परेशानियों में आते है। मैं सभी आम आदमी से अनुरोध करता हूँ, साधारण रहिये सुरक्षित रहिये।

THIS MONTH

June 17, 1972 - Following a seemingly routine burglary, five men were arrested at the National Democratic Headquarters in the Watergate complex in Washington, D.C. However, subsequent investigations revealed the burglars were actually agents hired by the Committee for the Re-election of President Richard Nixon. A long chain of events then followed in which the president and top aides became involved in an extensive cover-up of this and other White House sanctioned illegal activities, eventually leading to the resignation of President Nixon on August 9, 1974.

*****

June 30,1971-The 26th Amendment to the U.S. Constitution was enacted, granting the right to vote in all federal, state and local elections to American citizens 18 years or older. The U.S. thus gained an additional 11 million voters. The minimum voting age in most states had been 21.

*****

June 30, 1997 - In Hong Kong, the flag of the British Crown Colony was officially lowered at midnight and replaced by a new flag representing China's sovereignty and the official transfer of power.

Compilation:
Priya

BASICS OF MEDIA

Control Room :A room adjacent to the studio in which the director, the technical director, the audio engineer, and sometimes the lighting director perform their various production functions.

*****

Medium Requirements: All content elements, production elements, and people needed to generate the defined process message.

*****

Program Speaker: A loudspeaker in the control room that carries the program sound. Its volume can be controlled without affecting the actual line-out program feed. Also called audio monitor.

*****

Production Schedule: The calendar that shows the reproduction, production, and postproduction dates and who is doing what, when, and where.

*****

System: The interrelationship of various elements and processes whereby the proper functioning of each element is dependent on all others.

*****

Feed: Signal transmission from one program source to another, such as a network feed or a remote feed.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

संपादक की कलम से

भारतीय स्वास्थ्य सेवा में सुधार की सख्त आवश्यकता

किसी भी देश में स्वास्थ्य का अधिकार जनता का पहला बुनियादी अधिकार होता है। स्वस्थ नागरिक ही एक स्वस्थ व विकसित देश के निर्माणकारी तत्व होते हैं। हमारी तो सदियों से धारणा रही है कि पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया' तथा जान है तो जहान है। निःसंदेह, अच्छी सेहत ही सबसे बड़ा खजाना है। सेहत को लेकर कोई भी असावधानी किसी को भी मृत्यु के करीब ले जा सकती है। इसलिए हर उस चीज से परहेज करना ही उचित है जिससे सेहत को नुकसान पहुंचाता है या जो हमें बीमारियों का शिकार बनाती है। स्वास्थ्य के महत्व की ओर बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिये विश्व स्वास्थ्य संगठन के नेतृत्व में हर वर्ष 7 अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाया जाता है। गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा जेनेवा में वर्ष 1948 में पहली बार विश्व स्वास्थ्य सभा रखी गयी और विश्व स्वास्थ्य दिवस वर्ष 1950 में पूरे विश्व में पहली बार मनाया गया। भारत स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में बांग्लादेश, चीन, भूटान और श्रीलंका समेत अपने कई पड़ोसी देशों से पीछे हैं। इसका खुलासा शोध एजेंसी 'लैंसेट' ने अपने 'ग्लोबल बर्डेन ऑफ डिजीज' नामक अध्ययन में किया है। इसके अनुसार, भारत स्वास्थ्य देखभाल, गुणवत्ता व पहुंच के मामले में 195 देशों की सूची में 145वें स्थान पर है। विडंबना है कि आजादी के सात दशक बाद भी हमारे देश में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार नहीं हो सका है। सरकारी अस्पतालों का तो भगवान ही मालिक है ऐसे हालातों में निजी अस्पतालों का खुलाव तो कुकरमुत्ते की भांति सर्वत्र देखने को मिल रहा है। इन अस्पतालों का उद्देश्य लोगों की सेवा करना नहीं है बल्कि सेवा की आड़ में मेवा अर्जित करना है। लूट के अड्डे बन चुके इन अस्पतालों में इलाज करवाना इतना महंगा है कि मरीज को अपना घर, जमीन व खेत गिरवी रखने के बाद भी बैंक से लोन लेने की तकलीफ उठानी पड़ती है। दरअसल हमारे देश का संविधान समस्त नागरिकों को जीवन की रक्षा का अधिकार तो देता हैं लेकिन जमीनी हकीकत बिलकुल इसके विपरीत है। हमारे देश में स्वास्थ्य सेवा की ऐसी लचर स्थिति है कि सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों की कमी व उत्तम सुविधाओं का अभाव होने के कारण मरीजों को अंतिम विकल्प के तौर पर निजी अस्पतालों का सहारा लेना पड़ता हैं। देश में स्वास्थ्य जैसी अति महत्वपूर्ण सेवाएं बिना किसी विजन व नीति के चल रही है। ऐसे हालातों मे गरीब के लिए इलाज करवाना अपनी पहुंच से बाहर होता जा रहा है। गौरतलब है कि हम स्वास्थ्य सेवाओं पर सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी को सबसे कम खर्च करने वाले देशों में शुमार हैं। आंकड़ों के मुताबिक, भारत स्वास्थ्य सेवाओं में जीडीपी का महज 1. 3 प्रतिशत खर्च करता है, जबकि ब्राजील स्वास्थ्य सेवा पर लगभग 8.3 प्रतिशत, रूस 7.1 प्रतिशत और दक्षिण अफ्रीका लगभग 8.8 प्रतिशत खर्च करता है। दक्षेस देशों में, अफगानिस्तान 8.2 प्रतिशत, मालदीव 13.7 प्रतिशत और नेपाल 5.8 प्रतिशत खर्च करता है। भारत स्वास्थ्य सेवाओं पर अपने पड़ोसी देशों चीन, बांग्लादेश और पाकिस्तान से भी कम खर्च करता है। 2015–16 और 2016–17 में स्वास्थ्य बजट में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी, लेकिन मंत्रालय से जारी बजट में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के हिस्से में गिरावट आई और यह मात्र 48 प्रतिशत रहा। परिवार नियोजन में 2013–14 और 2016–17 में स्वास्थ्य मंत्रालय के कुल बजट का 2 प्रतिशत रहा। सरकार की इसी उदासीनता का फायदा निजी चिकित्सा संस्थान उठा रहे हैं। नेपाल और पाकिस्तान जैसे देशों से भी हम पीछे हैं, यह शर्म की बात है। देश में 14 लाख डॉक्टरों की कमी हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के आधार पर जहां प्रति एक हजार आबादी पर एक डॉक्टर होना चाहिए। वहां भारत में सात हजार की आबादी पर एक डॉक्टर है। दीगर, ग्रामीण इलाकों में चिकित्सकों के काम नहीं करने की अलग समस्या है। यह भी सच है कि भारत में बड़ी तेज गति से स्वास्थ्य सेवाओं का निजीकरण हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश में निजी अस्पतालों की संख्या 8 प्रतिशत थी, जो अब बढ़कर 93 प्रतिशत हो गई है। वहीं स्वास्थ्य सेवाओं में निजी निवेश 75 प्रतिशत तक बढ़ गया है। इन निजी अस्पतालों का लक्ष्य मुनाफा बटोरना रह गया हैं। दवा निर्माता कंपनी के साथ सांठ–गांठ करके महंगी से महंगी व कम लाभकारी दवा देकर मरीजों से पैसे ऐंठना अब इनके लिए रोज का काम बन चुका है। यह समझ से परे है कि भारत जैसे देश में आज भी आर्थिक पिछड़ेपन के लोग शिकार है। वहां चिकित्सा एवं स्वास्थ्य जैसी सेवाओं को निजी हाथों में सौंपना कितना उचित है? एक अध्ययन के अनुसार स्वास्थ्य सेवाओं के मंगे खर्च के कारण भारत में प्रतिवर्ष चार करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे चले जाते हैं। रिसर्च एजेंसी 'अर्न्स्ट एंड यंग' द्वारा जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, देश में 80 फीसदी शहरी और करीब 90 फीसदी ग्रामीण नागरिक अपने सालाना घरेलू खर्च का आधे से अधिक हिस्सा स्वास्थ्य सुविधाओं पर खर्च कर देते हैं। इन हालातों में भारत में सभी के लिए स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन की जरूरत है। पिछले एक दशक में प्रमुख स्वास्थ्य संकेतकों पर भारत की प्रगति और कई कमियों को अध्ययन में दस्तावेज किया गया है। यह शोध स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के साथ संरचनात्मक समस्याओं की पहचान करता है और साथ ही पिछले विशेषज्ञ समूहों की बातों को साबित करता है कि भारत की स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली के लिए एक नए क्रांतिकारी दृष्टिकोण की जरूरत है। भारत को स्वास्थ्य जैसी बुनियादी व जरूरतमंद सेवाओं के लिए सकल घरेलू उत्पाद की दर में बढ़ोतरी करनी होगी। सरकार को निशुल्क दवाइयों के नाम पर केवल खानापूर्ति करने से बाज आना होगा। साथ ही, यह ध्यान रखना होगा कि एंबुलेंस के अभाव में किसी मरीज को अपने प्राण नहीं गंवाने पड़े। इसके लिए मजबूत जनबल की जरूरत है। जनता को ऐसे प्रतिनिधि को चुनना होगा, जो स्वास्थ्य सेवा जैसी सुविधाओं को आमजन तक पहुंचाने का वायदा करें।

सैनिक- साधारण इंसान नहीं!

उपरोक्त वाक्य को देखकर थोड़ा अजीब और अटपटा जरूर लग सकता है परंतु सच्चाई यह भी है कि कुछ हद तक समझ तो आप चुके हैं कि इस का मतलब क्या है। और जो लोग नहीं समझे उन लोगों को बेहतर तरीके से समझाने में यह लेख आपकी सहायता करेगा। आज मै जिस बारे में बात करने जा रहा हूं वह है एक सैनिक और उसके साहस एवम् दरियादिली भरे कदम की। जी हां वही भारत मां के रखवाले जो दिन, रात, सर्दी, गर्मी, बारिश, बिना किसी चीज की परवाह किए सीमाओं पर तने खड़े रहते हैं यह सुनिश्चित करने के लिए कि भारत के सभी लोग एक चौन भरी नींद ले सकें। बशर्ते यह कहना मुश्किल नहीं होगा कि यह किसी साधारण व्यक्ति का काम नहीं है बल्कि भगवान का दूसरा रूप माना जाने वाला सैनिक ही इस काम के लायक है। यहां "सैनिक– साधारण इंसान नहीं!" का तात्पर्य इस कदर है कि आम लोगों के जिगरे में इतना दम नहीं कि वह अपनी जान की परवाह किए बगैर सीमाओं पर तैनात रहे। एक साधारण इंसान के लिए तो यह सोचना भी समझ के परे होगा की किस प्रकार से एक सैनिक दिन रात समस्त देशवासियों की रक्षा करता है, वह भी इतने बुरे हालातों में। क्या यह एक साधारण व्यक्ति का काम है? कुछ लोगों का जवाब होगा कि हां क्योंकि साधारण लोग ही तो जाकर सैनिक बनते हैं। जी नहीं, साधारण लोग सैनिक बनने के काबिल नहीं है सैनिक सिर्फ वही बन सकता है जिसके दिल में देश की रक्षा करने का जज्बा हो और अपने वतन पर मर मिट जाने का हौसला हो। जिसे अपनी जान से ज्यादा प्यारी अपने देशवासियों की नींद लगे वह है सैनिक। जिसे अपनी जान से ज्यादा प्यारी आम व्यक्तियों की दिनचर्या लगे वह है सैनिक। वरना आप ही मुझे बताएं कि ऐसा कौन है इस धरती पर जो खुद के प्राण की चिंता किए बगैर कठिन हालातों में मर मिटने को तैयार रहें। जिस प्रकार हम सभी को अपनी जान की सबसे ज्यादा परवाह रहती है, जिस प्रकार हमें अपने परिवार की चिंता हर वक्त सताती है। वहां एक सैनिक ही है जो अपने मां–बाप, पत्नी, बच्चे सबकी चिंता किए बगैर अपनी जान की बाजी लगाने सीमाओं पर छाती तान खड़ा रहता है। क्या आपमें इतना साहस है कि आप सब कुछ छोड़ छाड़ कर इस प्रकार देश की सेवा में लग जाएं। मैं कहता हूं मुझ में भी नहीं है जिसका मतलब यह कतई नहीं है कि मैं देशभक्त नहीं हूं परंतु जो साहस यह सब करने में चाहिए वह सिर्फ और सिर्फ एक सैनिक के पास ही होता है। दिल और दिमाग पर पत्थर रख वह हर वक्त अपने वतन के बारे में सोचता रहता है, ना कोई मांग, ना बड़े बड़े सपने, ना घर, गाड़ी, बंगला और ना ही एक आरामदायक जिंदगी। और सबसे विचलित कर देने वाली बात तो यह है कि किस प्रकार वह इंसान, वह भगवान की मूर्ति जिससे सबसे ज्यादा खौफ मृत्यु का होता है, जो छोटी छोटी बातों पर घबराकर पीछे हट जाता है, वहीं इंसान अपनी जान की फिक्र किए बगैर किसी और के लिए अपने प्राण न्योछावर करने को तत्पर रहता है। यही सब है जो एक सैनिक को साधारण इंसान बनने से अलग करती है। अब शायद आप मेरी बात से सहमत होंगे कि हां सैनिक साधारण इंसान नहीं!

अंत में एक छोटी सी गुजारिश के साथ यही कहना चाहूंगा कि हां हम सब में इतना साहस तो नहीं कि हम वह सब कर सके परंतु हम इतनी काबिलियत तो रख सकते हैं कि उस भगवान रूपी एक सैनिक का दिल से सम्मान करें और जितनी हो सके उससे कहीं ज्यादा सहायता करने को सर्वोपरि रहे। तभी हम सच्चे देश भक्त कहलाएंगे। जय हिंद, जय भारत।

स्वयं के जाल में फंसता ड्रैगन

भारत चीन सीमा पर तनाव इस समय अपने चरम पर पहुंच गया है। दोनों देशों की सेनाएं इस समय आमने–सामने हैं। चीन ने अपने आक्रमणकारी तरीके का परिचय देते हुए भारतीय क्षेत्र को अपने अधीन करने का प्रयास किया और वह भी रात के अंधेरे में जिसको भारतीय सेना ने अपने बलिदान से नाकाम कर दिया। यह पहली बार नहीं है जबकि चीन ने किसी दूसरे देश की सीमा का अतिक्रमण किया है। 1962 के बाद चीन ने कई बार भारतीय सीमा का अतिक्रमण करके थोड़ा–थोड़ा हिस्सा अपने अधीन करने का प्रयास किया है। 2014 के बाद जबकि केंद्र में भाजपा की सरकार आई और उसने अपने सैन्य संगठन को मजबूत किया साथ ही सीमाई क्षेत्रों में आवागमन के लिए कई सारे रोड और पुल बनाए जिसके परिणाम स्वरूप भारत की स्थिति सीमाई क्षेत्रों में मजबूत हो गई और यह बात चीन को गड़ रही है। वर्तमान में चीन की पहचान एक आक्रमणकारी देश का तरह हो चुकी है जिसने एशिया समेत पूरे विश्व को आक्रांत कर रखा है। चीन की विस्तार वादी नीति का ही परिणाम है कि उसने 43 लाख वर्गकिलोमीटर क्षेत्र विभिन्न देशों से हड़प चुका है। चीन का स्थलीय और समुद्री सीमा को लेकर 20 से ज्यादा देशों के साथ विवाद है। सीमा को लेकर चीन का वियतनाम तथा रूस के साथ पहले भी युद्ध हो चुका है और जापान से भी सीमा को लेकर तनाव चल रहा है। ड्रैगन इस समय काफी मुश्किलों में फंसा हुआ है। एक तरफ कोरोनावायरस के प्रसार को लेकर पूरा विश्व समुदाय उसके खिलाफ खड़ा है वही उसके द्वारा व्यापार में गलत तरीके अपनाने के कारण विश्व के अनेक देश उसका व्यापारिक बहिष्कार कर रहे हैं। भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, ब्रिटेन, जापान इत्यादि देशों ने चीन का व्यापारिक बहिष्कार करने का फैसला कर लिया है। एक तरफ कोरोनावायरस चीन में हुई मौतें, दूसरी तरफ चीन में आई व्यापक मंदी साथ–ही–साथ विश्व के बड़े बाजारों के द्वारा चीन के लिए दरवाजे बंद करना चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के लिए चुनौती बन गया है। चीन का या बुरा हाल कम्युनिस्ट पार्टी के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है जिससे निजात पाने के लिए वह विस्तारवादी चीन की नीति दिखाकर अपनी जनता को भुलावे में लेना चाहता है। वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का झुकाव भारत के तरफ बढ़ रहा है जिससे चीन का बहुत नुकसान होने वाला है तथा चीन में निवेश तथा रोजगार के अवसर कम होने वाले हैं। बहुत पहले से चीन की पहचान एक छली देश के रूप में चली आ रही है जो कोरोनावायरस प्रसार के दौरान और भी स्पष्ट हो गया चीन के द्वारा रात के समय भारतीय सैनिकों पर किया गया कायराना हमला पूरा विश्व देख चुका है और जान चुका है कि चीन अब पूरे विश्व की शांति के लिए खतरा है और सबको मिलकर इससे निपटना होगा। ताइवान तथा हांग कांग के खिलाफ चीन के द्वारा किए जा रहे हैं सैन्य प्रयास सैन्य प्रयास ब्रिटेन अमेरिका ऑस्ट्रेलिया तथा नाटो को चीन के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए विवश कर रहा है। अब जबकि चीन अपनी आक्रामक नीति दिखाकर भारत के साथ टकराव पर आमादा हो गया है इस स्थिति में चीन के खिलाफ विश्व समुदाय द्वारा धीरे धीरे मोर्चा खोलना ऐसा लग रहा है जैसे चीन स्वयं के दाव में फंसता जा रहा है। भारत को समझने की चीन उसी तरह की भूल कर रहा है जैसा भूल द्वितीय विश्व युद्ध में 1941 में जर्मनी ने रूस को समझने में किया था। 1979 मैं वियतनाम ने ही चीन के दांत खट्टे कर दिए थे इसके बावजूद व भारत जैसे देश से उलझ रहा है जो अपने आप में एक महाशक्ति है तथा जिसके साथ पूरा विश्व समुदाय खड़ा है। चीन का आक्रामक कदम उसके लिए एक ऐसे पराजय का कारण बन सकता है जिससे चीन की राजनीतिक व्यवस्था तथा मजबूत अर्थव्यवस्था तबाह हो सकती है।

Vol. 14 **No.** 5
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

The Winner is always part of the answer;
the Loser is always part of the problem.

*****

Winners are always part of the solution;
Losers are always part of the problem.

*****

The Winner says, "Let me do it for you";
the Loser says, "That's not my job."

*****

Winners have dreams;
losers have schemes.

*****

A Winner in the end gives more than he takes.
A Loser dies clinging to the illusion that winning means taking more than you give.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**